परिषद के विषय में जानकारी

नई दिल्ली स्थित भारतीय आयुर्विज्ञान अनुसंधान परिषद भारत में जैव आयुर्विज्ञान अनुसंधान के प्रतिपादन, समन्वयन और प्रोत्साहन हेतु एक शीर्षस्थ संस्था है । यह विश्व की प्राचीनतम आयुर्विज्ञान शोध संस्थाओं में से एक है ।

देश में आयुर्विज्ञान अनुसंधान को वित्तीय सहायता प्रदान करने और समन्वय स्थापित करने के विशेष उद्देश्य के साथ भारत सरकार द्वारा वर्ष 1911 में इंडियन रिसर्च फण्ड एसोसिएशन की स्थापना की गई थी । स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद इसके संगठन और इसकी गतिविधियों में अनेक महत्वपूर्ण परिवर्तन किए गए । वर्ष 1949 में इसके कार्यों में काफी विस्तार के साथ इसका नाम भारतीय आयुर्विज्ञान अनुसंधान परिषद (आई सी एम आर) कर दिया गया । इस परिषद को भारत सरकार के स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्रालय द्वारा वित्तीय सहायता प्राप्त होती है ।

परिषद की शोध प्राथमिकताएं राष्ट्रीय स्वास्थ्य प्राथमिकताओं के अनुरूप हैं जिनमें सम्मिलित हैं - संचारी रोगों पर नियंत्रण और उनका चिकित्सा प्रबन्ध, प्रजनन क्षमता नियंत्रण,मातृ एवं शिशु स्वास्थ्य,पोषणज विकारों का नियंत्रण,स्वास्थ्य सुरक्षा वितरण हेतु वैकल्पिक नीतियों का विकास, पर्यावरणी एवं व्यावसायिक स्वास्थ्य समस्याओं को रोकना, कैंसर, हृदवाहिकीय रोगों अंधता,मधुमेह तथा चयापचयज एवं रुधिर विकारों जैसे प्रमुख असंचारी रोगों पर अनुसंधान, मानसिक स्वास्थ्य अनुसंधान और औषध अनुसंधान (पारम्परिक औषधियों सहित) । ये सारे प्रयास रोग के पूर्ण भार को घटाने और आबादी के स्वास्थ्य एवं कल्याण को बढ़ावा देने को ध्यान में रखते हुए किए जा रहे हैं ।

केन्द्रीय स्वास्थ्य मंत्री परिषद के शासी निकाय के अध्यक्ष हैं । जैवआयुर्विज्ञान के विभिन्न विषयों के प्रतिष्ठित विशेषज्ञों की सदस्यता में बने एक वैज्ञानिक सलाहकार बोर्ड द्वारा इसके वैज्ञानिक एवं तकनीकी मामलों में सहायता प्रदान की जाती है । इस बोर्ड को वैज्ञानिक सलाहकार दलों,वैज्ञानिक सलाहकार समितियों,विशेषज्ञ दलों,टास्क फोर्स,संचालन समितयों,आदि द्वारा सहायता प्रदान की जाती है, जो परिषद की विभिन्न शोध गतिविधियों का मूल्यांकन करती हैं और उन पर निगरानी रखती हे ।

परिषद इंट्राम्युरल (परिषद के संस्थानों द्वारा सम्पन्न) और एक्स्ट्राम्युरल (परिषद से असम्बद्ध संस्थानों द्वारा सम्पन्न) अनुसंधान के माध्यम से देश में जैवआयुर्विज्ञान शोध को बढ़ावा देती है ।

वर्तमान में इंट्राम्युरल शोध देश भर में स्थित 21 स्थाई शोध संस्थानों/केन्द्रों और 6 क्षेत्रीय आयुर्विज्ञान अनुसंधान केन्द्रों के माध्यम से किए जा रहे हैं । परिषद के स्थाई संस्थान क्षयरोग, कुष्ठरोग, हैजा एवं अतिसारीय रोगों, एड्स सहित विषाणुज रोगों, मलेरिया,कालाजार, रोगवाहक नियंत्रण,पोषण,खाद्य एवं औषध विषविज्ञान, प्रजनन, प्रतिरक्षा रुधिरविज्ञान, अर्बुदविज्ञान, आयुर्विज्ञान सांख्यिकी,आदि विशिष्ट क्षेत्रों में शोधरत हैं । इसके अलावा क्षेत्रीय आयुर्विज्ञान अनुसंधान केन्द्रों द्वारा क्षेत्रीय स्वास्थ्य समस्याओं को दूर करने से संबंद्ध शोध किए जा रहे हैं, साथ-साथ देश के विभिन्न भौगोलिक क्षेत्रों मे शोध क्षमताओं को तैयार करना अथवा उन्हें सुदृढ बनाना भी उनका उद्देश्य है ।

परिषद द्वारा एक्स्ट्राम्युरल अनुसंधान को (i) मेडिकल कॉलेजों के चुने हुए विभागों,विश्वविद्यालयों तथा अन्य गैर-आई सी एम आर संस्थानों में उपलब्ध विशेषज्ञता तथा मूलभूत सुविधाओं की उपलब्धता के आधार पर विभिन्न अनुसंधान क्षेत्रों में उन्नत अनुसंधान केन्द्रों की स्थापना के द्वारा प्रोत्साहन दिया जाता है ; (ii) समय-बद्ध, लक्ष्योन्मुख प्रयासों तथा स्पष्ट रूप से व्यक्त लक्ष्यों के साथ टास्क फोर्स अध्ययनों पर भी बल दिया जाता है ; (iii) वैज्ञानिकों द्वारा प्रस्तावित परियोजनाएं (ओपेनएन्डेड रिसर्च) : देश के विभिन्न भागों में स्थित गैर आई सी एम आर संस्थानों, मेडिकल कॉलेजों, विश्वविद्यालयों, आदि के वैज्ञानिकों से वित्तीय सहायता के लिए प्राप्त आवेदनों के आधार पर अनुसंधान को बढ़ावा दिया जाता है ।

अनुसंधान गतिविधियों के अतिरिक्त, परिषद द्वारा (i) अनुसंधान शोधवृत्तियों ; (ii) लधुकालिक विजिटिंग फेलोशिप ; (iii) लधुकालिक अनुसंधान छात्रवृत्ति ; (iv) परिषद मुख्यालय तथा इसके संस्थानों द्वारा विभिन्न प्रशिक्षण कार्यक्रमों एवं कार्यशालाओं के आयोजन के द्वारा जैवआयुर्विज्ञान अनुसंधान में मानव संसाधन विकास को बढ़ावा दिया जाता है ।

परिषद द्वारा सेवा निवृत चिकित्सा वैज्ञानिकों तथा शिक्षकों को विशेष जैव आयुर्विज्ञानी विषयों पर अनुसंधान कार्य शुरू करने अथवा जारी रखने के लिए इमेरीटस वैज्ञानिक का पद दिया जाता है।

परिषद द्वारा भारतीय वैज्ञानिकों को जैव आयुर्विज्ञान अनुसंधान के क्षेत्र में उललेखनीय योगदानों के लिए पुरस्कार भी प्रदान किए जाते हैं । वर्तमान में परिषद द्वारा कुल 38 पुरस्कार प्रदान किए जाते हैं, इनमें से 11 विशेषरूप में 40 वर्ष से कम आयु के युवा वैज्ञानिकों के लिए हैं ।

विगत कुछ दशकों से जैवआयुर्विज्ञान के क्षेत्र में संक्रामक रोग एवं अतिशय जनसंख्या वृद्धि प्रमुख प्राथमिकता वाले क्षेत्र रहे हैं । इन पहलुओं पर बल देने के अतिरिक्त हाल के वर्षों में उभरने वाली स्वास्थ्य समस्याओं जैसे - हृदवाहिकीय रोगों,चयापचयी विकारों (मधुमेह मेलिटस को शामिल करके), मानसिक स्वास्थ्य समस्याओं, तंत्रिकाविज्ञानी विकारों, अन्धता, यकृतरोग,श्रवण ह्रास, कैंसर, नशीली दवाइयों का सेवन, दुर्घटनाओं,अपंगता,आदि पर गहन अनुसंधान किया गया है । पारम्परिक चिकित्सा/पादप औषधि उपचार पर अनुसंधान को रोगोन्मुख प्रयासों के साथ पुनर्जीवित किया गया । जैवआयुर्विज्ञानी समुदाय की बढ़ती मांगों तथा आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए जैवआयुर्विज्ञानी सूचना एवं संचार को दृढ़ता प्रदान करने एवं सुगम करने हेतु प्रयास किए गए हैं । परिषद नए रोगों तथा वर्तमान रोगों के नए स्वरूपों के प्रति भी सचेत है, वर्ष 1986 में भारत के विभिन्न राज्यों में एड्स हेतु निगरानी केन्द्रों के नेटवर्क का त्वरित संगठन इसका उदाहरण है ।